मौर्यकाल में प्रचलित अलंकार

डॉ0 अभिषेक सिंह*

चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा 324 या 321 ई0पू0 में मौर्य साम्राज्य की स्थापना, इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना थी। विशेषकर इस दृष्टि से कि यह साम्राज्य 327–325 ई0पू0 के दौरान उत्तर–पश्चिम भारत सिकन्दर के विजय अभियानों के तत्काल पश्चात् स्थापित हुआ था। चन्द्रगुप्त ने तक्षशिला के स्नातक आचार्य चाणक्य की सहायता से मगध शासक नंदवंश के अंतिम राजा का वध कर दिया। चन्द्रगुप्त की राजधानी भी पाटलिपुत्र हुई और उसने 298 ई0पू0 तक राज्य किया। इस अवधि में उसने पंजाब तथा तक्षशिला से यवनों (यूनानियों) को भगाया और अपना साम्राज्य पूरे उत्तरी भारत तथा पश्चिम में सौराष्ट्र तक विस्तृत कर लिया। लगभग 305 ई0पू0 में उसने सेल्यूकस का आक्रमण विफल कर दिया, जिससे सिकन्दर के साम्राज्य का पूर्वी भाग प्राप्त हुआ था। सेल्यूक्स चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित होने के बाद हिन्दुकुश के उस पार तक के अपने सभी पूर्वी प्रदेश देकर उससे संधि कर लेने के लिए विवश हुआ। उसने अपनी कन्या का विवाह चन्द्रगुप्त से कर दिया और अपना दूत मेगस्थनीज को उसकी राजसभा में भेजा। मेगस्थनीज ने उस काल के भारत का रोचक वृतांत लिखा है।

चन्द्रगुप्त की माता का नाम मुरा था। इस आधार पर उसका राजवंश ''मौर्य'' कहलाता है। चन्द्रगुप्त के बाद उसके पुत्र एवं उत्तराधिकारी बिन्दुसार ने 298 ई0पू0 से 273 ई0पू0 तक राज्य किया। उसने 'अमित्रघात' (शत्रुओं के घातक) की पदवी धारण की और सम्भवतः दक्षिण भारत भी विजय किया।

तीसरा मौर्य सम्राट् बिन्दुसार का पुत्र अशोक था, जिसने लगभग 273 ई0पू0 से 232 ई0पू0 में राज्य किया। सम्भवतः अशोक को मगध का सिंहासन प्राप्त करने के लिए युद्ध करना पड़ा, क्योंकि उसका राज्याभिषेक राज्यारोहण के चार वर्ष बाद हुआ। राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में उसने भारी रक्तपात के बाद कलिंग विजय किया। इस युद्ध में होने वाले नरसंहार ने अशोक की मानसिक वृत्ति बदल दी और भारी खेद से अभिभूत होकर उसने बौद्ध धर्म अंगीकार कर लिया और युद्ध को तिलांजलि दे दी। बौद्ध होने के बाद उसने भोष राज्यकाल, विशाल साम्राज्य के समस्त साधनों को केन्द्रीभूत करके भारत और भारत के बाहर बौद्ध धर्म का प्रचार करने तथा मनुष्यों और पशुओं के हित में सड़क बनवाने, कुएँ खुदवाने, धर्मशालाएँ बनवाने, प्याऊ बिठाने, चिकित्सालय खुलवाने आदि में बिताया। उसने सारे भारत में शिलाओं तथा स्तम्भों पर अनेक लेख खुदवाये, जिनमें प्रजा को दया, दान, सत्य, माता–पिता की सेवा, गुरूओं का आदर, प्राणियों की अहिंसा तथा सब मतों के प्रति सहिष्णुता का उपदेश दिया गया है। उसने बौद्ध भिक्षुओं को धर्म–प्रचार के लिए सिंहल (श्रीलंका) तथा पश्चिम के देशों में भेजा, जिसके फलस्वरूप बौद्ध धर्म का विश्वव्यापी प्रसार हुआ।

अशोक के उत्तराधिकारी योग्य नहीं सिद्ध हुए और उसकी मृत्यु पर साम्राज्य संभवतः

उसके एक पुत्र जालौक तथा पौत्र दशरथ के बीच विभाजित हो गया। इनमें से किसी में बौद्ध धर्म के प्रति अशोक जैसा अनुराग नहीं दिखाई पड़ा और ऐसा प्रतीत होता है कि अशोक की